वार्तालाप नं.1258, हरिपुर, तारीख–03.12.11
Disc.CD No.1258, dated 3.12.11 at Haripur
Extracts

(समयः–00:05:42–00:15:02)
जिज्ञासु – बाबा ने कहा कि अंत में शक्तियों को प्रेरणा करेंगे कि विनाश कराओ और प्रकृति के तत्वों को भी प्रेरणा करेंगे। प्रकृति के तत्वों को प्रेरणा करेंगे विनाश के लिए तो वो पार्ट कैसे होगा?
बाबा – कैसे होगा? शक्तियाँ कौन हैं और प्रकृति कौन है? प्रकृति को भी प्रेरणा मिलेगी और शक्तियों को भी प्रेरणा मिलेगी। प्रकृति को पहले प्रेरणा मिलेगी या शक्तियों को प्रेरणा पहले मिलेगी?
जिज्ञासु – शक्तियों को पहले प्रेरणा मिलेगी।
बाबा – क्यों?
जिज्ञासु – चैतन्य का सुधार पहले होगा।
बाबा – क्योंकि शक्तियाँ चैतन्य है। अच्छा, और प्रकृति टोटल जड़जड़ीभूत है?
जिज्ञासु – ज्यादा जड़जड़ीभूत है।
बाबा – हाँ, दोनों ही शक्तियाँ हैं लेकिन एक में अव्यभिचार की पॉवर है। भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। तो शक्तियाँ पहले प्रेरणा लेती हैं असुर संघारकारिणी बनने के लिए और बाद में प्रकृति भी प्रेरणा लेती है। अगर देखा जाये तो सम्पूर्ण पुरूष तो एक ही है बाकी तो सब जड़वतमयी प्रकृति है। प्र कृति – प्र माना प्रकृष्ट रूप से, कृति माना कारण से किया हुआ कार्य। आत्मायें जो भी हैं वो सब जड़वतमयी हैं परमपिता परमात्मा के मुकाबले तो सब प्रकृति हैं।

Time: 5.42-15.02
Student: Baba has said that in the end He will inspire the *shaktis* to create destruction and He will also inspire the elements of the nature for destruction; so how will that part be played?
Baba: How will it be played? Who are the *shaktis* (consort of Shiva) and who is nature (*prakriti*)? Nature will receive inspiration (*prernaa*) and the *shaktis* will also receive inspiration. Will nature receive inspiration first or will the *shaktis* receive inspiration first?
Student: The *shaktis* will receive inspiration first.
Baba: Why?
Student: The living one will reform first.
Baba: It is because the *shaktis* are living. *Achhaa*, and is nature totally intert?
Student: It is mostly inert.
Baba: Yes, both are *shaktis*, but one has the power of *avyabhicaar* (unadulterated purity). *Bhaarat Mata Shiv-Shakti avatar* (Mother India, the incarnation of *Shivshakti*), this is the very slogan of the end. So, first the *shaktis* receive the inspiration to become destroyers of demons and later on nature also receives inspiration. If you see, then there is just one complete *purush* (man). The rest is intert nature. *Pra kriti*. *Pra* means *'prakasht ruup se'* (in a special form); *'kriti'* means any task performed with a reason. All the souls are inert; when compared to the Supreme Father Supreme Soul, so all are nature.

देखा जाये तो पहले–2 नम्बर की प्रकृति है प्रजापिता ब्रह्मा जिसका आधार लेते हैं परमपिता परमात्मा। परमपिता सदैव चैतन्य है और जड़त्वमयी जड़जड़ीभूत आत्माओं को आकर चैतन्य बनाता है। सब उझाने हुए दीपक हैं; सबको चैतन्यता देता है। जब चैतन्य बनते हैं तो अपन को आत्मा समझते हैं। आत्मा अलग चीज़ है और प्रकृति का पुतला शरीर अलग चीज़ है।

प्रकृति का पुतला भी है और जो आत्मायें हैं उन आत्माओं में जन्म–जन्मान्तर का प्राकृतिक रूप से स्वभाव–संस्कार भरा हुआ है। जो स्वभाव–संस्कार भरा हुआ है उस स्वभाव–संस्कार के अनुसार ही सब अपना–2 पार्ट बजाने के लिए वशीभूत है। हरेक आत्मा में अपने 5000 वर्ष का पार्ट नुंधा हुआ है। जैसा पार्ट नुंधा हुआ है वैसा ही पार्ट बजाना पड़ता है। तो प्रकृति के द्वारा सारे कर्म किये हुए हैं जैसे पहले से ही। तो प्रकृति ज्यादा शक्तिशाली हुई या आत्मा ज्यादा शक्तिशाली हुई या परमपिता परमात्मा ज्यादा शक्तिशाली है?
जिज्ञासु – परमपिता परमात्मा ज्यादा शक्तिशाली।
बाबा – परमपिता परमात्मा ज्यादा शक्तिशाली है परंतु जो आत्मिक स्थिति में स्थित होते है वही परमात्मा के राईट हैण्डस है। आत्मिक स्थिति में जल्दी स्थित नहीं होते, देहभान में रहते हैं वो प्रकृति का जड़ रूप हैं। अंत समय में आत्मायें भी सम्पन्न बनती है और आत्माओं के संगठित योग से प्रकृति भी सम्पन्न बनेगी। भारतमातायें है सच्ची–2 आत्मायें, आत्मिक स्थिति में रहनेवाली। जिनके लिए बोला है शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। तो जो शिव शक्तियाँ हैं वो पहले परमपिता परमात्मा से प्रेरणा लेती हैं फिर प्रकृति भी प्रेरणा लेती है विनाश की। और,

If you see, the number one nature (*prakriti*) is Prajapita Brahma whose support is taken by the Supreme Father Supreme Soul. The Supreme Father is always living (*caitanya*) and He comes and makes the inert dilapitaded souls into living souls. Everyone's lamp is extinguished. He gives life (*caitanyata*) to everyone. When they become *caitanya*, then they consider themselves to be souls. A soul is separate and the idol of nature, [i.e.] the body is different. There is an idol of nature and the souls contain nature and *sanskaar* of many births naturally. Everyone is bound to play his *part* according to the nature and *sanskaar* that are recorded in them. The *part* of 5000 years is recorded in every soul. As is the *part* recorded in them, they have to play the same kind of *part*. So, it is as if the nature has already performed all the actions. So, is nature more powerful or is the soul more powerful or is the Supreme Father Supreme Soul more powerful?
Student: The Supreme Father Supreme Soul is more powerful.
Baba: The Supreme Father Supreme Soul is more powerful, but only those who become constant in the soul conscious stage are the *right hands* of the Supreme Soul. Those who do not become constant in the soul conscious stage quickly, those who remain body conscious, are the inert form of nature. In the end the souls become perfect and through the collective yoga of the souls, the nature will also become perfect. The mothers of India are true souls, those who live in soul conscious stage for whom it has been said that *shivshakti* incarnation is the very slogan of the end. So, the *shivshaktis* receive inspiration from the Supreme Father Supreme Soul first then nature also receives inspiration for destruction.

जिज्ञासु – रूद्रमाला पहले आत्मिक स्थिति के कारण बाप को पहचानता है और विजयमाला तो अंत में आकर के वो आत्मिक स्थिति में नम्बरवन चली जाती है?
बाबा – आत्मिक स्थिति में नम्बरवन चली जाती नहीं है; वो तो है ही आत्मिक स्थिति में। आत्मिक स्थिति में है इसलिए परमात्मा बाप उसको बहलाता है। ज्ञान में न होने के बावजूद भी, बाप की पहचान न होने के बावजूद भी वो खुशी में रहती है, साक्षात्कार और स्वप्नों की खुशी में रहती है। बाप उन्हें साक्षात्कार कराता रहता है; दुःखी नहीं होने देता। जो अपनी बुद्धि चलाते है वो दुःखी होते हैं। बुद्धिमान बाप को बुद्धिमान बच्चे ज्यादा प्रिय है या दिलवाले ज्यादा प्रिय है?
जिज्ञासु – दिलवाले।
बाबा – और,

जिज्ञासु – लेकिन ब्रॉड ड्रामा में बाप तो साथ नहीं होता है ना। संगमयुग में बाप साथ होते हैं लेकिन ब्रॉड ड्रामा में तो साथ प्राप्त नहीं होते।
बाबा – जिनके साथ बाप है, जो समझते हैं बाप साथ है वो कभी अनिश्चय बुद्धि में तो नहीं आते है? जल्दी बोलो।
जिज्ञासु – आते हैं।
बाबा – आते तो, डब्बा गोल कर दिया। तो जो आत्मिक स्थिति में स्थित होकर बाप का परिचय लेते हैं उनमें ये खासियत है। भले अंत में ज्ञान में आवेंगे लेकिन एक बार पहचानने के बाद फिर कभी भी अनिश्चयबुद्धि नहीं बनेंगे। इसलिए निश्चयबुद्धि सदा विजयते। ये विजयमाला की खासियत है; जो रूद्रमाला में वो खासियत नहीं है। भल कितना भी गहराई से समझेंगे, बड़े–2 विस्तार से समझेंगे, बड़ी गहराई से समझेंगे फिर भी, फिर भी क्या करते हैं? अनिश्चयबुद्धि विनश्यते होते जाते हैं।

Student: The *Rudramaalaa*[1] recognizes the Father first because of being soul conscious and does the *Vijaymaalaa*[2] comes in the end and becomes number one in soul conscious stage?
Baba: She does not become number one in soul conscious stage; she is already in the soul conscious stage. She is in the soul conscious stage; this is why the Supreme Soul Father entertains her. Despite not being in knowledge, despite not recognizing the Father, she remains joyful; she remains happy in visions and dreams. The Father gives visions to her; He doesn't let her be unhappy. Those who use their intellect remain unhappy. Does the intelligent Father like the intelligent children more or does He like the *dilvaale*[3] children more ?
Student: *Dilvaale*.
Baba: Anything else?
Student: The Father is with us in the Confluence Age, but He is not with us in the broad drama.
Baba: Do those with whom the Father is present, do those who think that the Father is with them lose faith ever? Speak up fast.
Student: They do.
Baba: They do. So, they become unsucessful. Those who obtain the Father's introduction while being in a soul conscious stage have this specialty: although they will enter the path of knowledge in the end, after recognizing [the Father] once, they will never lose faith. This is why those who have a faithful intellect always become victorious. This is the specialty of the *Vijaymaalaa*; the *Rudramaalaa* does not have this specialty. No matter how deeply they understand [the knowledge], they will understand it comprehensively, they will understand it very deeply, yet what do they do? They lose faith and are destroyed.

(समयः–00:18:05–00:21:02)
जिज्ञासु – सूक्ष्मवतन में जो बच्चे जाते हैं ...
बाबा – आप नहीं जाते सूक्ष्मवतन में? (जिज्ञासु ने कुछ कहां) आप सूक्ष्मवतन में जाते हैं कि नहीं जाते हैं? (जिज्ञासु – जाते हैं।) कैसे? (जिज्ञासु – मनन, चिंतन, मंथन।) मनन, चिंतन, मंथन से जाते हैं क्योंकि आपको अपना शरीर है इसलिए मनन, चिंतन, मंथन से जाते हैं। जिनको अपना शरीर नहीं है, शरीर छूट गया है और पुरूशार्थ भी पूरा हो चुका है, 84 जन्मों के पाप भी उनके, पिछले 83 जन्मों के पाप खतम हो गये हैं लेकिन वर्तमान जो लास्ट जन्म का पार्ट है उसमें कुछ न कुछ हिसाब–किताब सौ गुने पाप के बन गये तो वो सूक्ष्म

[1] The rosary of Rudra
[2] The rosary of victory
[3] Lit. those who have a heart, the emotional children

रूप से उनको विघ्न बने हुए हैं। जो सूक्ष्म शरीर खतम नहीं होने देते। इसलिए उनको भी सूक्ष्म शरीर से मनन, चिंतन, मंथन में रहना ही पड़ता है। जैसे हम मनन, चिंतन, मंथन में रहते है; वो भी मनन, चिंतन, मंथन में रहते हैं। हम बीजरूपी स्टेज में रहने के कारण मनन, चिंतन, मंथन में आते है, बिंदु की याद करने के कारण क्योंकि हम हैं ही बीजरूप आत्मा; वो बीजरूप आत्मायें नहीं हैं। उनको सूक्ष्म देह अभिमान है। उस देह अभिमान में रहकर के उन्होंने शरीर छोड़ा है। कौनसा देह अभिमान? कि भगवान बाप तो ज्ञान सुना के चला जाता है बाकी तो सारा काम स्वर्ग बनाने का हम करनेवाले हैं ये सूक्ष्म देह अभिमान रह गया। ये सूक्ष्म देह अभिमान जो है उनको सूक्ष्म शरीर की प्राप्ति कराए देता है और सूक्ष्म शरीर के बंधन में रह जाती हैं वो आत्मायें। तो सूक्ष्मशरीर के बंधन में रहने के कारण उनका जो मंथन है वो एक्युरेट नहीं होता है। आपका मंथन बीजरूपी स्टेज का है। बीजरूपी स्टेज माना परमपिता परमात्मा शिव की स्टेज। तो शिव तो सूर्य है ना तो सूर्य के बच्चों की स्टेज भी कैसी होगी? सूर्य समान। तो बहुत मंथन मनन, चिंतन में अंतर पड़ जाता है। इसलिए ब्रह्मा की सोल को शिवबाबा की बताई हुई मुरली की एक बात समझने में कितना टाईम लग जाता है। गीता का भगवान शिव कैसे है साकार में। कृष्ण साकार में नहीं है। तो अभी भी उनकी बुद्धि में नहीं बैठता।

Time: 18.05-21.02
Student: The children who go to the subtle world….
Baba: Don't you go to the subtle world? (Student said something.) Do you go to the subtle world or not? (Student: We do go.) How? (Student: Thinking and churning.) You go through [the process of] thinking and churning because you have a body; that is why you go through thinking and churning. Those who don't have a body at all, those who have left the body and whose *purushaarth* is also over, their sins of 84 births, their sins of the past 83 births have also ended, but they have accumulated karmic accounts of hundred fold sins in the *part* of the present birth, the *last* birth, then they face those obstacles in a subtle form. They do not allow the subtle body to perish. This is why they have to remain in a stage of thinking and churning through the subtle body. Just as we think and churn, they too think and churn. We think and churn because of being in a seed form *stage*, because of remembering the point because we are seed form souls anyway; they are not seed form souls. They have subtle body consciousness. They have left the body while being in that body consciousness. Which body consciousness? That God the Father narrates the knowledge and leaves; it is we who perform the remaining task of establishing heaven. This subtle body consciousness is left in them. This subtle body consciousness makes them take on a subtle body and those souls remain in the bondage of subtle body. So, because of being in the bondage of subtle body, their churning is not *accurate*. Your churning is of the seed form stage. The seed form *stage* means the *stage* of the Supreme Father Supreme Soul Shiva. So, Shiva is the Sun, isn't He? Then, how will the *stage* of the children of the Sun also be? It will be like the Sun. So, there is a lot of difference in their thinking and churning. This is why Brahma's *soul* takes so much *time* to understand one point of the murli narrated by Shivbaba. 'How is Shiva God of the Gita in a corporeal form? Krishna is not [God of the Gita] in a corporeal form'. So, it does not sit in their intellect even now.

(समयः–00:21:09–00:21:20)
जिज्ञासु – सुबीरस जो मुरली में आता है? सुबीरस।
बाबा – सुबीरस का मतलब है संगमयुग में ऐसा रस पिया जिसके समान दुनिया कोई भी रस नहीं है।

Time: 21.09-21.20
Student: What is *Subiras* (nectar) mentioned in the murli? *Subiras*.
Baba: *Subiras* means that there is no nectar in the world equal to the nectar that you drink in the Confluence Age.

(समयः–00:22:07–00:24:27)
जिज्ञासु – इन्द्रधनुष के जो सात रंग दिखाते हैं वो ज्ञान में वो सात रंग क्या है?
बाबा – अरे, इन्द्र है कौन? अगर ये समझ जायेंगे तो सात रंग भी समझ जायेंगे। कौन है इन्द्र? ब्रह्मा की सोल ही इन्द्र है, स्वर्ग का पहला पत्ता है, स्वर्ग का राजा है। तो जो स्वर्ग का पहला राजा है उसके नीचे सप्तरंग वाला धनुष, पुरूषार्थी धनुष, पुरूषार्थ करनेवाला धनुष वो सात नारायण हैं, जो सप्तरंगी कहे जाते हैं, ये सात रंग हैं। बाकी ब्रह्मा का रंग तो सफेद ही है। सफेद रंग बालकपने का सूचक होता है। बाकी सात रंग और हैं जो सात नारायणों के हैं, सात धर्मों में कनवर्ट हो जाते हैं वही सप्तरंगी धनुष हैं। जब बरसात पूरी होती है, श्रावण के महीने में कभी देखा है? बरसात जब पूरी होती है तो आकाश में इन्द्रधनुष दिखाई देता है अर्थात् वो सात नारायण ऊँची स्टेज में दिखाई पड़ते हैं। जिन बच्चों की ऊँची स्टेज होती है वो पहचानते हैं कि कौनसी वो आत्मायें हैं बेसिक में जो सात नारायण बननेवाली हैं, वो कौनसे पुरूषार्थ करनेवाले, धनुष को धारण करनेवाले ऐसे सात हैं आत्मायें। तो सातों का प्रत्यक्षीकरण होता है। उन्हें सप्तऋषि भी कहते हैं।
जिज्ञासु – बाबा अभी बी.के.भाई–बहनें अभी प्रैक्टिस कर रहे हैं आत्मा में सात रंग ...
बाबा – हर आत्मा में सात रंग होते हैं। जैसे शिव के तीन कार्य कर्ता है वैसे हर आत्मा के भी तीन कार्य कर्ता है। ऐसे हर आत्मा भी सात रंगों से भरी पूरी है। हर धर्म का कुछ न कुछ प्रभाव तो पड़ता ही है।

Time: 22.07-24.27
Student: What are the seven colours of the rainbow (*indradhanush*) in knowledge?
Baba: *Arey*, who is Indra? If you understand this, then you will understand the seven colours as well. Who is Indra? Brahma's *soul* himself is Indra, the first leaf of heaven, the king of heaven. So, there is a seven-coloured bow, the *purushaarthi* bow, the bow that makes *purushaarth* below the first king of heaven. They are the seven Narayans who are called seven colours. These are the seven colours. As regards Brahma his colour is just white. White colour is an indicator of childhood. There are seven more colours, which represent the seven Narayans; they *convert* to seven religions; they themselves are the seven coloured bow. When the rain is over, did you ever see in the month of *shraavan* (during monsoon)? When the rain stops, then the rainbow is seen in the sky, i.e. those seven Narayans are visible in a high *stage*. The children who are in a high *stage* recognize: who are the souls who are going to become the seven Narayans in the basic knowledge, which are the seven souls who make *purushaarth*, who hold the bow [of *purushaarth*]. So, all the seven are revealed. They are also called *saptarishis* (the seven sages).
Student: Baba, now the BK brothers and sisters are practicing to … seven colours in the soul…
Baba: There are seven colours in every soul. Just as there are three workers of Shiva, similarly there are three workers of every soul. In the same way, every soul is filled with seven colours. There is definitely some effect of every religion [in them].

(समयः–00:24:32–00:28:34)

जिज्ञासु – साकार में निराकार को याद करने का, ज्यादा से ज्यादा समय तक याद करने का तरीका.....। हम जब बी.के. में थे तो बिंदु को ज्यादा समय तक याद करना आसान लगता है लेकिन अभी साकार में निराकार .....करने का तरीका बताईये?
बाबा – जब बिंदु को याद करना सहज लगता है तो बिंदु को ही याद करना चाहिए। निराकारी वर्सा लेना अच्छी बात है, खराब बात है? निराकार से निराकारी वर्सा लेना, ज्ञान का वर्सा लेना अच्छी बात है या खराब बात है? इब्राहीम, बुद्ध, क्राईस्ट, गुरूनानक ने निराकार को याद करना सहज समझा या साकार में निराकार को याद करना सहज समझा?
जिज्ञासु – निराकार को।
बाबा – निराकार को याद करना सहज समझा। तो देखो उनको ज्ञान का वर्सा मिल जाता है। द्वापर और कलियुग में उनके ज्ञान का मुकाबला कोई कर पाता है क्या? कोई नहीं कर पाता। तो आपको भी ज्ञान का वर्सा मिल जायेगा। बहुत सहज बात है, अच्छी बात है।

Time: 24.32-28.34
Student: Baba, tell me the method of remembering the incorporeal One within the corporeal one for the maximum time. When we were BKs, it was easy to remember the point for a long period, but now tell me the method to remember the incorporeal One within the corporeal one…
Baba: When you find remembering the point to be easy, then you should remember just the point. Is it good to obtain the incorporeal inheritance or is it something bad? Is it good or bad to obtain the incorporeal inheritance, the inheritance of knowledge from the incorporeal One? Did Abraham, Buddha, Christ, Guru Nanak find remembering the incorporeal One to be easy or did they find remembering the incorporeal One within the corporeal one to be easy?
Student: The incorporeal one.
Baba: They considered remembering the incorporeal One to be easy. So, look they get the inheritance of knowledge. Is anybody able to counter their knowledge in the Copper Age and Iron Age? Nobody is able to do. (Ironically:) So, you will also get the inheritance of knowledge. It is very easy; it is good.

जिज्ञासु – साकार में निराकार को ज्यादा समय याद करने का तरीका बताईये?
बाबा – क्यों याद? जब आपको सहज मिल रहा है। सहज मिले सो दूध सम, मांग लिया सो पानी और खींच लिया सो खून बराबर। आपको तो निराकार को याद करना सहज है ना तो दुनिया का मान–मर्तबा भी मिल जायेगा। 63 जन्मों में मान–मर्तबा जो ज्ञानी तू आत्मायें हैं दुनिया के हिसाब से, जैसे क्राईस्ट है दो सौ करोड़ से ऊपर मनुष्य आत्मायें उसको ज्ञान का मापदंड समझती हैं। तो दो सौ करोड़ आत्माओं से मान–मर्तबा मिला या नहीं मिला? भगवान का साकार रूप उन क्रिश्चियनस ने किसको माना? क्राईस्ट को माना। तो कम बात है क्या? अरे, कम बात है या ज्यादा बात है?
जिज्ञासु – ज्यादा बात है।
बाबा – ज्यादा बात है!
जिज्ञासु – कम बात है।
बाबा – कम बात है। कम क्यों? कम इसलिए है कि मान–मर्तबा ही दुनिया में बड़ी चीज़ नहीं है। वो झूठा मान–मर्तबा है या सच्चा मान–मर्तबा है कि हम ज्ञानसूर्य है? क्राईस्ट अगर ये समझ के बैठ जाये कि मैं ज्ञानसूर्य हूँ साकार में तो ये झूठा मान–मर्तबा है या सच्चा है?
जिज्ञासु – झूठा।

Student: Tell me a method to remember the incorporeal One within the corporeal one for a longer time.

Baba: Why remember [the incorporeal One within the corporeal one] when you are getting it easily? Whatever you get easily is equal to milk, whatever you seek is equal to water and whatever you snatch is equal to blood. For you it is easy to remember the incorporeal One, isn't it? So, you will get the respect and position of the world. The knowledgeable ones from the worldy point of view, the respect and position that they get… for example, there is Christ Over two hundred crore (two billion) human souls consider him to be the sun of knowledge. So, did he get respect and position from two hundred crore souls or not? Whom did those Christians consider as the corporeal form of God? They considered Christ. So, is it any less achievement? *Arey*, is it a less achievement or a highachievement?
Student: It is high.
Baba: It is higher. Hum? (Everyone is laughing.)
Student: It is less.
Baba: It is less? Why is it less? It is less because respect and position alone is not a big thing in the world. Is it false respect and position or a true respect and position [to think:] I am the Sun of knowledge? If Christ thinks that he is the Sun of knowledge in the corporeal form, then is it a false respect and position or is it true?
Student: False.

बाबा – अगर झूठा है तो एक दिन खुलेगा या नहीं खुलेगा?
जिज्ञासु – खुलेगा।
बाबा – कब खुलेगा? अंतिम जन्म में जाकर के दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा तब उन क्राईस्ट और इब्राहिम को भी जाकर माथा झुकाना टिकाना पड़ेगा। किसके सामने? सद्गुरू के सामने। जो सद्गति देनेवाला है। तब सारी दुनिया के आगे, सारे फालोअर्स के आगे उनकी नाक नीची हो जायेगी। ये शिवोहम् कहनेवालों ने 63 जन्म तो अपना नाक ऊँची कर ली। भगवान को, जो असली भगवान है उसको नीचा साबित कर दिया। लेकिन अंतिम जन्म में, अंतिम जन्म में सजा खाने के अधिकारी बनते हैं कि नहीं बनते हैं? सजायें खाने के अधिकारी बन जाते हैं।

Baba: If it is false, then will it be revealed one day or not?
Student: It will be.
Baba: When will it be revealed? In the last birth milk will be distinguished with water (poper justice will be made), then those Christ and Abraham will also have to go and bow their head. In front of whom? In front of the *Sadguru*, who gives *sadgati* (true liberation). Then they will lose respect in front of the entire world, in front of all their *followers*. These people who say *Shivoham* (I am Shiva) took respect for 63 births. They proved God, the true God to be low. But in the last birth, in the last birth do they become entitled to suffer punishments or not? They become entitled to suffer punishments.

(समयः–00:28:39–00:32:34)
जिज्ञासु – बाबा ज्ञान, योग, धारणा, सेवा ये चार सब्जेक्ट हैं.....
बाबा – हाँ, क्यों नहीं है? पहले ज्ञान क्यों है? किसलिए है ज्ञान पहले?
जिज्ञासु – ज्ञान से अच्छा है योग .....
बाबा – योग अच्छा है कि ज्ञान अच्छा है?
जिज्ञासु – योग अच्छा है। योग तो प्रैक्टिकल है ना।
बाबा – योग तो प्रैक्टिकल है; ज्ञान प्रैक्टिकल तो है नहीं। ज्ञान प्रैक्टिकल नहीं है? ज्ञान नहीं होगा तो योग लगेगा? बी.के. में कहेंगे ज्ञान है?
जिज्ञासु – नहीं है।

बाबा – क्यों नहीं है ज्ञान? आत्मा का ज्ञान नहीं है? आत्मा का ज्ञान तो है लेकिन आत्मा को आत्मिक स्थिति में स्थित करानेवाला कौन है?
जिज्ञासु – बाप।
बाबा – बाप। उसका ज्ञान है?
जिज्ञासु – नहीं।

Time: 28.39-32.34
Student: Baba, knowledge, yoga, *dhaaranaa* and service, are these four subjects, mutually linked?
Baba: Yes, why not? Why is knowledge first? Why is knowledge first?
Student: Yoga is better than knowledge…
Baba: Is yoga better or is knowledge better?
Student: Yoga is better. Yoga is *practical*, isn't it?
Baba: Yoga is *practical*; knowledge is not *practical*. Isn't knowledge *practical*? Can you have yoga if there isn't knowledge? Will it be said that there is knowledge in the BKs?
Student: There isn't.
Baba: Why isn't there knowledge? Isn't there the knowledge of the soul? There is certainly the knowledge of the soul, but who enables the soul to become constant in the soul conscious stage?
Student: The Father.
Baba: The Father. Is there His knowledge?
Student: No.

बाबा – फिर फायदा क्या हुआ? तो असली ज्ञान ही है। जो ज्ञान को महत्तव देते हैं परमात्मा बाप उन बच्चों को भी महत्तव देता है। क्यों देता है? क्योंकि ज्ञानी बच्चा होगा तो बाप का काम पूरा करेगा। अगर अज्ञानी है तो बाप को संसार में प्रत्यक्ष नहीं करेगा। जो ज्ञानी होगा, जितना ज्ञानी होगा, अगर सौ परसेन्ट ज्ञानी होगा तो सौ परसेन्ट लाजमी है कि योगी भी होगा। इसमें कोई दो मते नहीं हो सकती। इसलिए ज्ञान पहले है उसके बाद दूसरा नम्बर योग है। योग की पॉवर ज्यादा है। योग ऐसे है जैसे अन्न, अनाज और ज्ञान ऐसे है जैसे पानी। पानी में ज्यादा ताकत है या अन्न में ज्यादा ताकत है?
जिज्ञासु – अन्न।
बाबा – अन्न में ज्यादा ताकत है। लेकिन अन्न खाये जाओ सारा दिन, महीने दो महीने अन्न खाओ और पानी बिल्कुल मत पिओ, तो भस्म हो जायेगा कि रह जायेगा? भस्म हो जायेगा। इसलिए ज्ञान को पहले तरजीह दी गई, पहले रखा गया। इसका मतलब ये नहीं है कि ज्ञान पॉवर। ज्ञान तो पानी है। भगवान बाप आकर के जो ज्ञान देते हैं। उस ज्ञान से ही सृष्टि रची जाती है। जो सृष्टि रची जाती है वो संकल्पों की सृष्टि है। अब संकल्प करनेवालों के ऊपर है। जितना बाप की याद में रहकर के संकल्प करेंगे उतना सच्ची दुनिया रचने, अपनी दुनिया सच्ची बनाने के निमित्त बनेंगे। अगर बाप को याद नहीं किया; अन्य देहधारी को याद किया तो सत् संकल्प उठेंगे या झूठे–2 संकल्प उठेंगे? झूठे संकल्प उठेंगे, झूठी दुनिया बनाने के निमित्त बन जायेंगे।

Baba: Then what is the use? So, it is just knowledge that is true. The Supreme Soul Father gives importance to the children who give importance to knowledge. Why does He give [importance to them]? It is because if the child is knowledgeable, he will complete the task of the Father. If he is ignorant, he will not reveal the Father in the world. The one who is knowledgeable, the more knowledgeable he is, if he is hundred percent knowledgeable, then it is hundred percent sure that he will be a *yogi* as well. There cannot be two opinions in this.

This is why knowledge is first; after that yoga is second. There is more power in yoga. Yoga is like food (*ann*), foodgrains (*anaaj*) and knowledge is like water (*paani*). Is there more power in water or in food?
Student: Food.
Baba: Food has more power. But if you go on eating food throughout the day, if you eat food for a month or two but don't drink water at all, then will he perish or will he survive? He will perish. This is why knowledge was given the first preference. It was placed first. It does not mean that knowledge has *power*. Knowledge is water. The world is created only through the knowledge that God the Father gives when He comes. The world that is created is a world of thoughts. Now it depends upon those who create thoughts. The more you create thoughts in the Father's remembrance, the more you will become instruments in creating a true world, in making your world true. If you do not remember the Father, if you remember other bodily beings, then will you get true thoughts or will you get false thoughts? You will get false thoughts; you will become instruments in establishing a false world.

(समयः–00:33:51–00:37:48)
जिज्ञासु – राजयोग की राज के बारे में प्रतिष्ठित...
बाबा – राजयोग की राज के बारे में प्रतिष्ठित करना? वो तो स्वयं ही प्रतिष्ठित है। उसको प्रतिष्ठित करने की जरूरत क्या है? जो सच्चाई है, वो सच्चाई को सिद्ध करने की जरूरत होती है क्या? सच्चाई तो स्वयं ही सिद्ध है, सिर पर चढ़कर बोलती है, राज भरा हुआ है। जिस राज को सोलह हजार एक सौ आठ गोप–गोपियाँ ही जानते है अच्छी तरह से। वो जाननेवाले गोप–गोपियाँ ही राजयोगी है। जो नम्बरवार राजघराने में जन्म लेते हैं; बाकी सोलह हजार एक सौ आठ के बाद का जो मणका है वो राज को नहीं जानता है इसलिए उस राज का अपोजिशन करता है। सारी दुनिया अपोजिशन करती है। लेकिन जीत फिर भी राजाओं की होगी या सारी दुनिया जो प्रजावर्ग में जाती है उसकी जीत होगी? पॉवरफुल कौन है? जो राजपरिवार है, जो राजायें है, राजाओं का परिवार है वही पॉवरफुल बनता है क्योंकि भगवान बाप से प्रैक्टिकल में उन्होंने शक्ति ली है राज को समझने के कारण। वो जानते हैं कि भगवान बाप से सम्बन्ध जोड़ने से जो शक्ति मिलती है वो और किसी मनुष्य आत्मा से नहीं मिल सकती। प्रैक्टिकल शक्ति है और प्रैक्टिकल शरीर को कहा जाता है। बिना शरीर के प्रैक्टिकल नहीं होता है। उनका नाम समझनेवालों का रखा गया है गोप और गोपियाँ। गोप अर्थात् गुप्त राज है। सारी दुनिया को जानने की चीज़ नहीं। उनको समझाओ तो भी नहीं समझेंगे। उसमें गोप भी है, गोपियाँ भी है। गोपियों को सहज है समझना और गोपों को भी सहज है। ये उन गोपों की बात है जिन्होंने अपनी कन्या अर्पण की हुई है, जिन्होंने अपनी भानजी अर्पण की हुई है, जिन्होंने अपनी नातिन अर्पण की हुई है, पोत्री अर्पण की हुई है। वो गोप उस गुप्त रहस्य को जानते हैं। जिन्होंने अपनी बहन अर्पण की हुई है तो जिन्होंने अर्पण कर के प्रैक्टिकल में ये अनुभव किया है कि किस आधार पर गुप्त राज है वो ही समझेंगे। दूसरे नहीं समझेंगे। जिनको अपनी कन्या है ही नहीं, अपनी बहन है ही नहीं, यज्ञ में दी ही नहीं है प्रैक्टिकल में नहीं दी है, दूर–दराज के रिश्ते में भी नहीं दी है तो वो अपोजिशन कर सकते हैं और अपोजिशन करनेवाले ही राज को नहीं जानते हैं।

Time: 33.51-37.48
Student: The secret of Raja yoga…..
Baba: Establishment of the secret of Raja yoga? It is already established. Where is the need to establish it? Is there any need to prove the truth? Truth is self-proven. Truth stands high. There is a secret in it. Only sixteen thousand one hundred and eight *gop-gopis* (cow herd and herd girls) know that secret well. Only the *gop-gopis* who know [the secret] are *rajyogis*. They are born numberwise (at different levels) in the royal clan. The bead next to the 16108th

[bead] does not know the secret; this is why he opposes that secret. The entire world opposes. Still, will the kings win or will the entire world which becomes *prajaa* (subjects) win? Who is *powerful*? The royal family, the kings, the family of kings becomes powerful because they have obtained power from God the Father in practice due to understanding the secret. They know that the power they receive from God the Father by establishing a connection with Him cannot be received from any other human soul. It is *practical* power and the body is called *practical*. There is no *practical* without the body. Those who understand [this secret] have been named *gop-gopis*. *Gop* means it is a secret (*gupt raaz*). It is not something to be known by the entire world. They will not understand even if they are explained [about it]. There are *gops* as well as *gopis* among them. It is easy for the *gopis* as well as the *gopes* to understand. It is about those *gops* who have surrendered their daughters, their nieces, their daughter's daughter, their son's daughter - those *gops* understand that secret - , their sister. So, those who have surrendered and experienced in practice the basis of that secret, only they will understand. The others will not understand. Those who do not have a daughter at all, those who do not have a sister at all, those who haven't given them to the *yagya* at all, those who have not given in practice, those who have not given [their daughter or sister] even in distant relationship can indulge in *opposition* and only those who indulge in *opposition* do not know the secret.

(समयः–00:38:00–00:38:42)
जिज्ञासु – बाबा कहा जाता है वाचा, कर्मणा से मनसा सबसे श्रेष्ठ है। हम कैसे जान सकेंगे कि उसके ऊपर मनसा सेवा गया कि नहीं?
बाबा – वो तो तब ही जानेंगे जब मनसा एकाग्र होगी। जब तक मनसा में चंचलता है तब तक उसकी महानता का कैसे पता चलेगा। मनसा एकाग्र हो जाये तो मन से जो भी संकल्प करेंगे वो उसी समय सिद्ध होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? सिद्ध होना चाहिए। तो मनसा की महानता का पता लग जायेगा। ऐसे ही वाचा।

Time: 38.00-38.42
Student: Baba, it is said that mind is more elevated than words and actions. … How will we come to know whether our service through mind had an effect on a certain person or not?
Baba: You will know only when the mind is focused (*ekaagra*). As long as there is inconstancy in the mind, how can you know its greatness? If the mind becomes focused, then should whatever thoughts you create through the mind become fruitful at the same time or not? They should become fruitful. Then you will know about the greatness of the mind. Similar is the case with words.

(समयः–00:47:45–00:49:36)
जिज्ञासु – बाबा हम चाहते कि ज्ञान–योग में पक्के होने के लिए।
बाबा – आप कहते हैं कि ज्ञान–योग में पक्के होने के लिए।
जिज्ञासु – हमारा यही चाहना है लेकिन बीच–2 में हम ढीले क्यों पड़ते हैं?
बाबा – क्रिश्चियन जो हैं, मुसलमान जो हैं वो पूर्वजन्मों को नहीं मानते। संगमयुग में जब उन्हें ज्ञान मिलेगा तो पूर्वजन्म की बातें जहाँ–2 आती है उनको भूल जायेंगे या उनको याद रहेगी?
जिज्ञासु – भूल जायेंगे।
बाबा – तो आप पूर्वजन्म को भूल गये। 63 जन्म अगर याद रहे कि आत्मा ने पाप करनेवाले 63 जन्म भी लिये है जिनमें हम पाप भी किये हैं और कुछ थोड़ा बहुत पुण्य भी किया है। जब पुण्य किये हैं तो हमारी अवस्था रील घूमती है पुण्यों की, अच्छी रहती है और जब

पापकर्मों की रील घूमती है तो अवस्था डाउन हो जाती है, अनिश्चय बुद्धि बन जाते हैं। ये कारण है उसका।
जिज्ञासु – पक्के कैसे बनेंगे?
बाबा – लगे रहो। लगन बहुत बड़ी चीज़ है। अभ्यासेयन तु कौन्तेय वैराग्यण च गृहयते। इस दुनिया से वैराग लाते रहो। दुनिया खलास होनेवाली है इससे हमे कुछ मिलनेवाला नहीं है और आत्मिक स्थिति का अभ्यास, बाप की याद का अभ्यास पक्का करते रहो तो 63 जन्मों के पाप जल्दी–2 खलास हो जायेंगे। ज्ञान और योग में मजबूत हो जायेंगे।

Time: 47.45-49.36
Student: Baba, we want to be firm in knowledge and yoga.
Baba: You say that you want to be firm in knowledge and yoga.
Student: This is our wish, but why do we become loose in between?
Baba: The Christians, the Muslims do not believe in the past births. When they get knowledge in the Confluence Age, will they forget the topics of the past births or will they remember them?
Student: They will forget.
Baba: So, you have forgotten the past birth. If you remember the 63 births, [if you remember] that the soul also had 63 births in which it committed sins… we have committed sins as well noble actions to some extent in [the 63 births], when we performed noble actions, when the *reel* of noble actions (*punya*) rotates, then our stage remains good and when the *reel* of sins rotates then the stage goes *down*; we lose faith. This is its reason.
Student: How will we become firm?
Baba: Be persistent. Persistence is a very great thing. *Abhyaasen tu kaunteya vairagyen cha grihyate*[4]. Go on developing detachment for this world. [Think that] this world is going to perish. We are not going to gain anything from it. And go on making the practice of soul consciousness, the Father's remembrance firm, then the sins of the 63 births will perish quickly. You will become strong in knowledge and yoga.

(समयः–00:50:25–00:54:01)
जिज्ञासु – अष्टदेव के जो आठ मणके हैं, हम पहले समझते थे कि रूद्रमाला के वो आठ मणके पूरे के पूरे निकलेंगे अभी कुछ सुनने को मिल रहा है कि रूद्रमाला से चार और विजयमाला से चार निकलते हैं। ये क्या सही है बाबा?
बाबा – मुख्य धर्म कितने हैं?
जिज्ञासु – आठ।
बाबा – आठ हैं मुख्य धर्म?
जिज्ञासु – चार।
बाबा – चार ही मुख्य धर्म हैं। तो जो चार मुख्य धर्म हैं उन चार मुख्य धर्मों में चार आत्मायें तो रूद्रमाला से हैं, सूर्यवंश से, और उनकी सहयोगिनी बनती हैं सबसे ज्यादा सहयोग देनेवाली, वो रूद्रमाला से बनते हैं पहले चार, पहले चार रूद्रमाला के जो मणके हैं उनको सौ परसेन्ट सहयोग देनेवाले रूद्रमाला से बनते हैं या विजयमाला से बनते हैं?
जिज्ञासु – विजयमाला।
बाबा – विजयमाला से बनते हैं। तो उनको नम्बर नहीं लगायेंगे? उनका भी नम्बर लगेगा।

[4] O son of Kunti, you can [control the mind] through the practice of yoga and detachment for this old Iron Age world

Time: 50.25-54.01
Student: As regards the eight beads among the eight deities, we used to think earlier that all those eight beads will emerge from the *Rudramaalaa;* now we hear that four emerge from *Rudramaalaa* and four from the *Vijaymaalaa*. Is this correct Baba?
Baba: What is the number of the main religions?
Student: Eight.
Baba: Are there eight main religions?
Student: Four.
Baba: There are only four main religions. So, among the four main religions, four souls are from *Rudramaalaa*, from the Sun dynasty and those who extend cooperation to them, those who give them the maximum help… the first four emerge from the *Rudramaalaa*; the first four beads of the *Rudramaalaa*, do those who help them hundred percent emerge from the *Rudramaalaa* or from the *Vijaymaalaa*?
Student: *Vijaymaalaa*.
Baba: They emerge from the *Vijaymaalaa*. So, will they not get the *number*? They will also get the *number*.

जिज्ञासु – ये चार केवल सहयोगी शक्ति बन के चार बनते हैं या चार–चार मिल के आठ बनते हैं?
बाबा – वही आठ हो गये, वही आठ आत्मायें हैं, चार जोड़े हैं।
जिज्ञासु – अष्टदेव का जो हिसाब नम्बर है इसी प्रकार है?
बाबा – उस अष्टदेव में वो देवियाँ भी शामिल है। कहा जाता है अष्टदेव क्योंकि वो पहले नम्बर है। बाकी और जो चार हैं बाद वाले रूद्रमाला के मणके पाँचवा, छटवाँ, सातवाँ, आठवाँ वो सहयोगी धर्म है या मुख्य धर्म है?
जिज्ञासु – सहयोगी।
बाबा – सहयोगी है, वो छेड़े हैं। उनका भी नम्बर आयेगा, वो भी नम्बर में गिने जायेंगे। आठ जोड़े बनेंगे कि नहीं? विजयमाला बनेगी तो विजयमाला में जो ऊपर का मेरू मणका होता है वो युगल मणका है या सिंगल है? (किसीने कहा–युगल मणका।) उससे क्या साबित होता है कि वो एक सौ नौवाँ है या एक सौ आठवाँ है? अरे, क्या है? वो एक सौ नववाँ मणका है या एक सौ आठवाँ मणका है? अरे, माला में, विजयमाला में एक सौ आठ ही मणके है या एक सौ नौ मणके है?
जिज्ञासु – एक सौ आठ।
बाबा – एक सौ आठ माना ऊपर मेरू मणका दिखाया गया है वो सिर्फ ये बताने के लिए दिखाया गया है कि जितने भी मणके हैं वो सब युगल हैं। इसलिए चार सूर्यवंश में से और चार चंद्रवंश में से इस तरह आठ युगल मणके हैं। माना टोटल आत्मायें कितनी हैं? सोलह आत्मायें हैं। पूर्वज होंगे पूर्व में जन्म लेने वाले तो उनके बच्चे तो बाद में जन्म लेनेवाले हुए या पूर्वज हुए? बाद में जन्म लेनेवाले। तो जो बाद में जन्म लेनेवाले हैं उनके पूर्वज माँ और बाप दोनों हुए या एक ही होगा? दोनों हुए।

Student: Are these four just helpers or do these four and four together constitute eight?
Baba: They themselves are the eight [beads]; they themselves are the eight souls, four couples.
Student: Is this the count of the eight deities?
Baba: Those *devis* (female deities) are also included among those eight deities. It is said eight deities because they are in the first *number*. The remaining four beads of the *Rudramaalaa*, the fifth, sixth, seventh and eighth, are they helper religions or main religions?
Student: Helper.

Baba: They are helpers; they are branches. Their *number* (turn) will also come; they will also be counted. Will eight couples be formed or not? When the *Vijaymaalaa*is formed, then the *meru* bead (couple bead) on the top in the *Vijaymaalaa*, is it a couple bead or single [bead]? (Someone said: Couple bead.) What does it prove? Is it the one hundred and ninth or one hundred and eighth [bead]? *Arey*? *Arey*, what is it? Is it the one hundred and ninth bead or the one hundred and eighth bead? *Arey*! *Arey*, are there only one hundred and eight beads in the *Vijaymaalaa* or are there one hundred and nine beads?
Student: One hundred and eight.
Baba: One hundred and eight. It means that the *meru* bead shown above is shown only to depict that all the beads are couples. This is why four are from the Sun dynasty and four are from the Moon dynasty. In this manner there are eight couple beads. It means that how many souls are there in *total*? There are sixteen souls. If they are ancestors (*puurvaj*), who are born (*janma*) in the past (*puurva*), then are their children born later or are they ancestors? They are born later. So, those who are born later, are their ancestors both, the mother and the father or is it only one of them? They are both.

(समयः–00:54:04–00:56:05)
जिज्ञासु – बाबा भठ्ठी करने का जो बाबा बोल रहे हैं कि 9 दिन का जो हिसाब देते हैं 5 या 7 दिन भठ्ठी और दो–दो 4 दिन जाने–आने का।
बाबा – चार दिन नहीं। एक दिन जाना और एक दिन आना।
जिज्ञासु – उसके हिसाब से बाबा 9 दिन का जो भठ्ठी करने का जो हिसाब दिये हैं अगर कम्पिल के या फर्रूखाबाद के कोई आदमी उसी दिन निकलते हैं ज्ञान में, उसी दिन निश्चय बैठ जाता है उनका जो 9 दिन का तो हिसाब है.....वो कैसे बन गया?
बाबा – वो एक दिन पहले ही बन गया।
जिज्ञासु – कैसे ...?
बाबा – उन्होंने जब फैसला किया जब।
जिज्ञासु – माना उसी दिन सुबह उन्होंने अपने को निश्चय कर लिया।
बाबा – तुमको ये पता है फर्रूखाबाद वाले निश्चयबुद्धि जल्दी बनते हैं या दक्षिण भारत वाले जल्दी निश्चयबुद्धि बनते हैं?
जिज्ञासु – दक्षिण भारत।
बाबा – तो तुरंत निश्चयबुद्धि बनना ये फर्रूखाबाद वालों का हिसाब नहीं है। इसलिए वो एक दिन, दो दिन कम से कम जरूर लगायेंगे कि जायें या न जायें। तो उनका वो एक दिन एड किया जाता है। वापस जाते समय भी वो तुरंत फैसला नहीं करते हैं क्योंकि भारतवासियों का पूर्ण समर्पण होने में हृदय विदीर्ण होता है। क्या कहा? दक्षिण भारत के, क्या नाम दिया? फौरन–2 माना फौरन फैसला लेते हैं और नार्थ इंडिया के फौरन फैसला नहीं ले पाते। क्या राईट है? क्या रांग है? लफड़े में फंस जाते हैं। क्योंकि वहाँ गुरू लोग उत्तर भारत में ज्यादा है या दक्षिण भारत में ज्यादा है? उत्तर भारत में देहधारी धर्मगुरू ढ़ेर बैठे हुए है उनकी बुद्धि को फंसानेवाले तो बार–2 उनके चक्कर में आ जाते हैं।

Time: 54.04-56.05
Student: Baba, as regards *bhatti*, the account of nine days that Baba gives, five days *bhatti* and two days each, i.e. four days for arrival and departure.
Baba: Not four days. One day for arrival and one day for departure.
Student: Calculating the nine days *bhatti* that way Baba, if a person from Kampil or Farrukhabad enters the path of knowledge on a day and has faith on the same day, then the nine days calculation for them…how is it calculcated?
Baba: The calculation started a day earlier.

Student: How …?
Baba: The day when he took the decision…
Student: I mean to say he had faith on the same day in the morning…
Baba: Do you know whether do those from Farrukhabad have faith soon or do those from south India have faith soon?
Student: South India.
Baba: So, those from Farrukhabad will not have faith immediately. This is why they will definitely take at least one or two days to decide whether they should go or not. So, that one day is added for them. They do not decide immediately even about their departure because the heart of the residents of India (*Bhaaratvaasi*s) breaks in surrendering fully. What has been said? What is the name given to South India? *Fauran*[5] (foreign). Foreigners means those who decide immediately. And those from north India are unable to decide immediately: What is *right*? What is *wrong*? They are stuck in confusion because are there more gurus in north India or in south India? There are numerous bodily religious gurus sitting in north India who trap their intellect; so, they are entangled in them again and again. (Concluded.)

[5] Quickly